Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
पुस्तक - एकांकी संचय
पाठ - 5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी)
लेखक - भरत भूषण अग्रवाल

एकांकी का परिचय

'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में एकांकीकार भरतभूषण अग्रवाल जी ने एक पौराणिक विषय वस्तु को सर्वथा नए ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया है कि महाभारत के विनाशकारी युद्ध के लिए केवल दुर्योधन ही ज़िम्मेदार नहीं था, बल्कि पांडवों की महत्त्वकांक्षी प्रवृत्ति भी किसी न किसी रूप में ज़िम्मेदार थी। एकांकीकार ने इस एकांकी के माध्यम से यह संदेश भी दिया है कि परिवार में कभी भी घर या संपत्ति को लेकर कुल में अथवा भाइयों में वैमनस्य, ईर्ष्या अथवा द्वेष भाव नहीं होना चाहिए। धन अथवा संपत्ति को लेकर एक-दूसरे में त्याग की भावना होनी चाहिए। त्याग और सहनशीलता का अभाव ही महाभारत के युद्ध का कारण बना। इस प्रकार अन्याय पर न्याय की, असत्य पर सत्य की, दुराचरण पर अच्छे आचरण की जीत हुई। मनुष्य को हमेशा अच्छे मूल्यों के साथ जीना चाहिए तथा सद्कर्म, परोपकार की भावना रखनी चाहिए। इसी महत्त्व को प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ने समझाया है।

पात्र - परिचय

1. धृतराष्ट्र - महाभारत काल में हस्तिनापुर के जन्मांध राजा, कौरवों के पिता, पांडु इनके छोटे भाई एवं पांडव भतीजे थे।
2. संजय - धृतराष्ट्र का मंत्री और सच्चा सहयोगी, महाभारत के युद्ध का विवरण अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर धृतराष्ट्र को सुनाने वाला।

3. दुर्योधन - हस्तिनापुर राज्य का युवराज, धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में सबसे बड़ा पुत्र, मूलनाम सुयोधन।
4. युधिष्ठिर - पांडु और कुंती के पुत्र, पाँचों पांडवों में सबसे ज्येष्ठ पुत्र।
5. भीम - युधिष्ठिर के छोटे भाई, कुंती के दूसरे पुत्र, बलशाली, गदा युद्ध में अत्यंत निपुण योद्धा।

स्थान - कुरुक्षेत्र के निकट द्वैत वन के जलाशय का किनारा।

पाठ का सार

धृतराष्ट्र सारंगी पर आलाप सुनते ही ठण्डी साँस लेते हैं। वे संजय से अपने हृदय का दुःख प्रकट कर रहे हैं कि महाभारत के युद्ध में सब कुछ नष्ट हो गया। वे सोच रहे हैं कि पुत्र स्नेह के कारण कूटनीति, षडयन्त्र, अन्याय आदि दुर्गुण एक न्यायी राजा की श्रेणी में नहीं आने देंगे। वे श्रेष्ठ राजा नहीं कहलाएँगे और भविष्य में इतिहास उन्हें क्षमा नहीं करेगा। जो कार्य शास्त्रों द्वारा गलत माने गए हैं अथवा जिन कार्यों का करना धर्मशास्त्रों ने मना है या जिन कार्यों से दूसरों को हानि होती है वे पाप की श्रेणी में आते हैं। धृतराष्ट्र पुत्र के प्रति स्नेह को अपराध मान रहे हैं कि पुत्र के प्रति स्नेह स्वाभाविक है और हर मनुष्य के अंदर यह भाव होता है।

पांडवों ने दुर्योधन की सेना को अठारह दिनों तक चले महाभारत के युद्ध में पराजित कर दिया था। संजय, धृतराष्ट्र को महाभारत के युद्ध की पल-पल की खबर देते थे। युद्ध में दुर्योधन की सेना मारी जा चुकी थी। उसके बंधु-बांधव भी युद्ध में मारे जा चुके थे पर दुर्योधन किसी तरह बच गया था। वह रणक्षेत्र से भागकर अपनी जान बचाने द्वैत वन के सरोवर के जलस्तंभ में जाकर छिप गया था। उसको छिपते हुए कुछ शिकारियों ने देख लिया था। उन्होंने यह बात पांडवों को बता दी थी। अतः दुर्योधन को खोजने और उसका काम तमाम करने के लिए भीम और युधिष्ठिर द्वैत वन पहुँच गए।

युधिष्ठिर अपने छोटे भाई भीमसेन से दुर्योधन के विषय में बात कर रहे हैं। वे भीम को समझाते हुए कहते हैं कि दुर्योधन जैसे पापी को लज्जा कैसे होगी क्योंकि उसी के लालच

के कारण कौरव-पांडव के अनेक वीर और सगे संबंधी मारे गए। यदि वह राज्य का लालच न करता तो लाखों वीर न मारे जाते। बच्चे अनाथ न होते, सुहागिनें विधवा न होतीं और हज़ारों माँओं की गोद सूनी न होती। लाखों लोगों की हत्या का ज़िम्मेदार होने के कारण ही युधिष्ठिर ने उसे पापी कहा।

दुर्योधन ने सारा राज्य पाने के लालच में अपने मामा शकुनि की कुटिल चालों में आकर युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिए बुलाया। दुर्योधन की ओर से शकुनि खेल रहा था और पांडव पक्ष से युधिष्ठिर। जुआ खेलने के मामले में युधिष्ठिर कच्चे खिलाड़ी साबित हुए और हाथी-घोड़े, धन-दौलत आदि एक-एक कर हारते गए। अंत में वे द्रौपदी को भी दांव पर लगा बैठे और हार गए। अब दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी का चीर हरण शुरू किया। उस समय दुर्योधन व अन्य कौरव भरी सभा में अपनी भाभी द्रौपदी को अपमानित होते देखकर भी मूकदर्शक बने खड़े थे। युधिष्ठिर के अनुसार जिसने माँ समान स्त्री को अपमानित करके आनंद की प्राप्ति की, उसके लिए लज्जा नाम का कोई भाव सार्थक नहीं है और आज वह कायरों की भाँति युद्ध करने के स्थान पर जलाशय में छिपकर अपने प्राणों की भीख माँग रहा है। दुर्योधन को इस प्रकार सरोवर में छुपा देखकर भीम जब उसका उपहास उड़ाते हुए कहता है कि इस तरह प्राण बचाते हुए तुझे लज्जा नहीं आती तब दुर्योधन कहता है हँस लो दुष्टों! जितना जी चाहे हँस लो पर यह न भूलना कि मैं अभी जीवित हूँ। मेरी भुजाओं का बल भी अभी नष्ट नहीं हुआ है। उसकी इन बातों को भीम ने व्यर्थ बकवास कहा है। साथ ही युधिष्ठिर दुर्योधन से यह भी कहता है कि तू क्या समझता है कि हम तेरी थोथी बातों से डर जाएँगे।

दुर्योधन एक वीर पुरुष है और उसे अपनी शक्ति का अभिमान है इसलिए वह कहता है कि अभी भी उसका गर्व चूर नहीं हुआ है। जिस तरह अग्नि में घी डालकर उसे जाग्रत रखते हैं। उसी प्रकार दुर्योधन ने द्वेष, घृणा और अन्यायरूपी घी से अपने और अपने स्वजनों के कालरूपी अग्नि को प्रज्वलित कर दिया है। उसके सभी स्वजन तो उस अग्नि में भस्म हो चुके थे। अब

दुर्योधन की बारी है। पांडवों की विजय भी तभी होगी जब दुर्योधन मारा जाएगा। वे उसे बताना चाहते हैं कि बिना दुर्योधन की आहुति लिए हुए युद्ध में फैली कालाग्नि शांत नहीं होगी।

दुर्योधन जानता था कि महाभारत के युद्ध के लिए पांडव उसे ही ज़िम्मेदार मानते हैं। दुर्योधन इस समय असहाय हो रहा था क्योंकि महाभारत के युद्ध में उसकी सेना मारी जा चुकी थी। बचे-खुचे वीर तितर-बितर हो चुके थे। वह स्वयं अस्त्र-शस्त्र विहीन हो चुका था। उसका कवच नष्ट हो चुका था। वह युद्ध में घायल होकर थक चुका था। पांडवों से युद्ध करने का साहस अब उसमें न था। दुर्योधन ने कहा कि मैंने भी तुम्हें तेरह वर्ष का समय दिया था। दुर्योधन ने जुए में शर्त रखी थी कि हारने वाले को बारह वर्ष का वनवास और एक साल का अज्ञातवास बिताना होगा तथा इस अवधि में पहचाने जाने पर पुनः इतनी अवधि के लिए वन में रहना होगा। जुए में युधिष्ठिर की हार हुई थी इसलिए उन्हें तेरह वर्ष वनवास में काटने पड़े थे। तेरह वर्ष के वनवास में दुर्योधन का उद्देश्य पांडवों को सत्ता से दूर रखना, उनकी शक्ति कम करना, उनके सहायकों को उनसे दूर करना और उनका मनोबल तोड़ना था। इससे दुर्योधन को राज्य हथियाने में सहायता होती परन्तु दुर्योधन अपने इस उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया क्योंकि वन में रहकर भी पांडवों ने अपनी शक्ति बढ़ाई, निकट संबंधियों से मेल-जोल बढ़ाया और देवताओं को प्रसन्न कर दिव्यास्त्र प्राप्त किया जो महाभारत के युद्ध में उनकी विजय में सहायक बने।

सरोवर में छुपा दुर्योधन धर्म की दुहाई देते हुए युधिष्ठिर से कहता है कि तुम्हें घमण्ड है कि तुम अधर्म नहीं करते फिर तुम्हारी आँखों के आगे ऐसा अधर्म हो यह तुम कैसे सोच सकते हो अर्थात् दुर्योधन की सेना तितर-बितर हो गई है। मेरे सभी हथियार चुक गए हैं इस समय युद्ध करने का साहस मुझमें नहीं है। भीम हँसकर दुर्योधन को उत्तर देता है कि अब तुम्हें धर्म की याद आई है। सच ही कहा गया है कायर और पराजित व्यक्ति ही अंत में धर्म की शरण ले लेते हैं।

कक्षा - दसवीं (हिन्दी साहित्य) शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा FREEMIND
पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी)

शब्दार्थ

(1) जन्मांध - जन्म से अंधा (2) विवरण - व्याख्या, वर्णन (3) दिव्य - अलौकिक (4) जलाशय - सरोवर (5) आलाप - स्वरों का साधन (6) परिणाम - नतीजा (7) भीषण - भयानक (8) विष - ज़हर (9) शोक - दुःख (10) व्यर्थ - बेकार (11) आत्मरक्षा - अपनी रक्षा (12) जलस्तंभ - एक प्रकार का चक्रवात, जो जल में बनता है (13) तत्काल - उसी समय (14) अहेरी - शिकारी (15) चेष्टा - प्रयास (16) दुरात्मा - बुरी आत्मा (17) काल - मृत्यु (18) सहयोगी - सहयोग करने वाला, साथ काम करने वाला (19) कलंक - लांछन (20) लज्जा - शर्म (21) अनहोनी - असंभव, न होने वाली (22) सव्यंग्य - व्यंग्य के साथ (23) भुजाओं - बाहों (24) गर्व - अभिमान (25) बखानना - विस्तार से वर्णन करना (26) थोथी - खोखली, खाली (27) निर्ममता - कठोरता, निर्दयता (28) सत्ता - अधिकार, प्रभुत्व (29) पराक्रम - वीरता, शौर्य (30) कालाग्नि - मृत्यु की ज्वाला (31) घृत - घी (32) लपटों - आग की लौ (33) स्वाहा - भस्म हो गए (34) आहुति - बलिदान (35) तितर - बितर - बिखर जाना (36) कवच - आत्म-रक्षा के लिए पहनने वाली वस्तु (37) शस्त्रास्त्र - शस्त्र और अस्त्र (हथियार) (38) क्षीण - दुर्बल, कमज़ोर (39) अनायास - बिना प्रयास के (40) आत्म-प्रवंचना - अपने आप को धोखा देना (41) दंभ - घमण्ड (42) स्मरण - याद (43) शरण - पनाह

निर्देश

* छात्र पाठ की पृष्ठ संख्या 69, 70 और 71 को विस्तारपूर्वक एवं सचित्र ढंग से पढ़ेंगे एवं समझेंगे। शेष भाग अगले सप्ताह भेजा जाएगा।
* अभिभावकों से भी अनुरोध है कि वे इस पाठ को समझाने में अपने बच्चों की सहायता करें।

गृहकार्य

* छात्र एकांकी संचय अभ्यास पुस्तिका की पृष्ठ संख्या 73 में दिए अवतरण (1) जो अपने सगे संबंधियों ---------- उसका लज्जा से क्या परिचय ?) पर आधारित प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]